कार्यालय जिला पंचायत (ग्रामीण विकास), छिन्दवाड़ा

सफलता की कहानी

:: आदिवासी किसानों के लिए लाईफ-लाईन बना नाला ::

एनआरईजीएस में हुए बोरी-बंधान से हुआ भरपूर पानी

एक सैंकड़ा परिवार होंगे लाभान्वित, लहलहा रही खेतों में फसल

फसल की कम पैदावार, सूखा और जलसंकट जैसी गंभीर समस्याओं से जूझने वाले लगभग एक सैंकड़ा आदिवासी किसान इस वर्ष राहत की सांस लेंगे। जिला प्रशासन द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी स्कीम वॉटरशेड के माध्यम से आदिवासियों के लिए किए गए एक छोटे से प्रयास ने यह कार्य संभव कर दिखाया है। हम बात कर रहे है हर्रई विकासखंड की ग्राम पंचायत मुआरसानी के आदिवासी किसानों की। पानी के अभाव में जिन किसानों की खड़ी फसल सूख जाती थी, उनके खेतों में अभी धान, मक्का, तुअर आदि की फसल लहलहा रही है। यह संभव हो पाया है गांव में से बहने वाले ''उमरनाला'' पर बोरी–बंधान करने से। उस नाले पर एक दर्जन बोरी–बंधान एवं एक स्टॉपडेम का निर्माण कर पानी रोका गया है। जो नाला पहले आदिवासी किसानों के लिए अनुपयोगी था, अब लगभग एक सैंकड़ा आदिवासी किसान परिवारों के लिए लाईफ–लाईन का कार्य कर रहा है।

जिला पंचायत सीईओ डॉ. श्रीनिवास शर्मा द्वारा सभी नदी–नालों पर बोरी–बंधान एवं कड़ी शटर लगाकर अधिक से अधिक पानी रोकने के निर्देश दिए गए थे। इसी के परिपालन में मुआरसानी के उमरनाला में बोरी–बंधान के कार्य बहुतायत में कराए गए।

खेतों में छाई है हरियाली :

उमरनाला ग्राम मुआरसानी के पास से बहता है, जिसके किनारों पर गांव के लगभग एक सैंकड़ा किसानों के खेत स्थित है। नाले पर जलग्रहण समिति मुआरसानी ने रोजगार गारंटी योजनांतर्गत बोरी–बंधान का कार्य कराया, जिससे नालों में भरपूर पानी रूका है। फसल को नियमित पानी मिलने से खेत लहलहा रहे है। कुछ किसान नदी में मछली भी पकड़ रहे है।

सूख जाती थी फसल और कुंए :

किसान बालाराम, रहस्सी, मूलचंद, चैतराम आदि ने बताया कि पहले यह नाला सूख जाता था। सिंचाई के अभाव में फसलें भी सूख जाती थी। बहुत कम फसल उत्पादन होता था। कुंए भी दम तोड़ देते थे, लेकिन बोरी–बंधान होने से कुंए और हैंडपंप भी रिचार्ज हो गए है ।

मजदूरों को मिला रोजगार :

उमरनाला पर 12 बोरीबंधान एवं एक स्टॉपडेम का निर्माण कराया गया है। इस कार्य में गांव के जॉबकार्डधारी लगभग 50–60 मजदूरों को रोजगार का अवसर भी प्राप्त हुआ। ग्रामीणों को निस्तार एवं पीने के पानी की सुविधा हो गई और मवेशियों को भी पर्याप्त पानी मिलने लगा है। एक बोरी–बंधान में लगभग एक हजार रूपए की लागत लगी है। एक बोरी–बंधान में लगभग एक हजार रूपए की लागत लगी है। जलग्रहण समिति के अध्यक्ष सेवकराम कुमरे एवं सचिव फूलबहान शाह इवनाती ने बताया कि बोरी–बंधान एवं स्टॉपडेम कार्य से किसानों के चेहरे खिल गए है। उन्हें अच्छी फसल उत्पादन होने की उम्मीद है ।